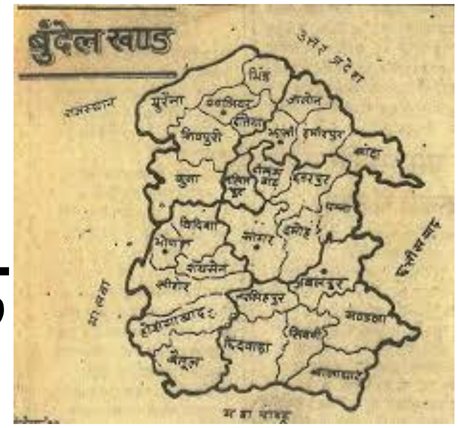
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





पुराने भवन
Old Buildings

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

पुराने भवन Old Buildings

अध्याय शीर्षक	पुराने भवन
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Old Buildings**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

पुराने भवन Old Buildings

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पुरातन मकानों का संक्षिप्त वर्णन

पुराने भवन Old Buildings

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुराने भवन

बान्दा में लगभग 50 से ज्यादा ऐसे भवन है जो 100 वर्ष से ज्यादा का समय पूरे कर चुके हैं और अंग्रेजों के समय में बने इस तरह के भवनों को सरकारी ऑफिस या आवासीय भवन बना दिया है। इन मकानों की फिर कभी मरम्मत भी नहीं हुई। दरवाजे और खिड़की की गल कर अलग हो चुके हैं, इसके बावजूद इन भवनों में कार्यालय संचालित है। कई भवनों में लोग निजी व्यवसाय का कार्य है या फिर रह रहे हैं। नगर पालिका के कर्मचारी खुद 200 वर्ष पुराने भवन में सपरिवार रहते हैं। नगर पालिका से इनको नोटिस भी दिया जाता है लेकिन यह खाली नहीं होते। सभी भावनाओं का मकान का सर्वे कराया गया था जिनमें से 40 को कितने अयोग्य कहा गया लेकिन कोई हादसा होने पर किसी न किसी को जिम्मेदार समझाया जाएगा। सीपीडब्लूडी मैनुअल के अनुसार दशको पहले ही ये भवन नाकारा हो चुके है।

बारादरी भवन में नगर पालिका का कार्यालय कुछ समय पहले तक चलता रहा है जो अब मौजूद नहीं है। लेकिन नगर पालिका के चार कर्मचारी यहां अभी भी रहते हैं। आज 15 साल पहले अर्थात 2010ई0 में अयोग्य घोषित किया गया है लेकिन नगर पालिका अधिकारी रहने वाले कर्मचारियों से इस खाली कराने के लिए तैयार नहीं।

आयुर्वेदिक और यूनानी दफ्तर, जिला पंचायत के नजदीक एक भवन में है जो लगभग 150 वर्ष पूर्व बना था खिड़की व दरवाजे उखाड़ चुके हैं और इनको बोरियों से बंद किया गया है। छत मौत के रूप में सर के ऊपर मौजूद है।

बाबूलाल चौराहे के पास काली मन्दिर के सामने बिजली विभाग का कार्यालय संचालित है। भवन का कार्यकाल सीपीडब्लूडी मैनुअल के अनुसार 40 साल तक माना गया है। विद्युत वितरण खन्ड का भवन भी इसी अवस्था में है।

सदर तहसील में आवासीय भवन बेहद जर्जर हालात में हैं। 20 ब्लॉक बने हुए हैं और 100 साल पहले यह भवन बनाए गए थे अब अयोग्य घोषित हो चुके हैं, लेकिन वहां रहने वाले किसी भी तरीके से उन मकानों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। उनको खाली कर देना चाहिए। अधिकारी नगर पालिका बान्दा इनको तोड़ने के लिए कोई भी कार्य करने के लिए तैयार नहीं है। शायद कियी के प्रति उत्तरदायी नहीं।

कानपुर शनिवार 9 अगस्त 2025 अमर उजाला पे सेवा

<u>गवर्नमेंट इंटर कॉलेज (जीआईसी)</u>

इसकी स्थापना 1869 ईस्वी में हुई थी। सबसे पहले यह गवर्नमेंट मिडिल स्कूल के नाम से खुला उसके बाद अपग्रेड होकर गवर्नमेंट हाई स्कूल और फिर अपग्रेड होकर जीआईसी के नाम से स्थापित हुआ। 1869ई0 को खुला स्कूल लगभग 90 साल के बाद जीआईसी बना (1960ई0 के लगभग)। उपरोक्त जानकारी स्कॉलर रजिस्टर से भी प्राप्त की गई है। यह वह रजिस्टर है जिससे बच्चों की टीसी (स्कूल ट्रान्सफर सर्टिफिकेट) जारी की जाती है। उसका कुछ हिस्सा दीमक खा चुकी है, लेकिन अभी भी पढ़ने योग्य है।

इस मिडिल स्कूल के लिए जमीन युसूफजमा के पूर्वजों ने दान दिया था, जिसका 1978ई0 में गजट नोटिफिकेशन के द्वारा अधिग्रहित कर ली गई।

इसका जी आर को–ऑर्डिनेट 25.483192, 80.334603 है। इस विद्यालय में हिन्दी, इन्गिलश, विज्ञान, गणित, सन्स्कृत, उर्दू, कॉमर्स, कहने का अर्थ लगभग लगभग सभी विषय इस विद्यालय में उपलब्ध है। यही सबसे बड़ा विद्यालय है जिसके पास सबसे ज्यादा जमीन है व विद्यालय से सम्बधित सारी सुविधाए है। 2018ई0 में बने हॉस्टल में छात्रों के अलावा बाकी सब रहते हैं। इस हॉस्टल में प्रिंसिपल हाउस, हॉस्टल, और वार्डन हाउस भी बना हुआ है। नए बने हॉस्टल में बहुत सारे सरकारी ऑफिसों ने कब्जा किया हुआ है। जैसे– चाइल्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट ऑफिसर, डीपी का ऑफिस, निर्वाचन आयोग, संयुक्त शिक्षा निदेशक का ऑफिस, जिला चकबंदी का ऑफिस और इसी तरह से अन्य।

पुराने भवन **Old Buildings**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा में तीन विद्यालय बहुत पुराने हैं जिसमें जीआईसी बान्दा और आदर्श बजरंग इण्टर कालेज, बान्दा मुख्य हैं। पीएम श्री (प्रधानमंत्री श्री– राइजिंग इंडिया) के लिए 2023–2024 में इस विद्यालय को अर्थात् जीआईसी को चुना गया है। इसके अलावा जीआईसी मटौध, जीजीआईसी बान्दा भी पीएम श्री के अंतर्गत चुने गए थे। अटल टिन्करिंग लैब यहां पर बनाई जा रही है जिसमें रोबोटिक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पढ़ाई जाएंगे।

फोटोग्राफ प्रथम प्रधान–अध्यापक जीआईसी

संदर्भ –श्री धर्मपाल(पीइएस) प्रधानाध्यापक 2025ई की बातचीत
गजेट 1977

<u>बॉन्डेड वेयरहाउस</u>

पुराने भवनों में इस वक्त <u>बॉन्डेड वेयरहाउस</u> जो 1910ई0 में बना था, आज भी मौजूद है। बिना किसी तब्दीलियां के बॉन्डेड आज भी मौजूद है। इसकी लोकेशन अशोक लाट के पास, कचहरी जहां पर भू रजिस्ट्री वगैरा अर्ज की जाती हैं, परिसर में अन्दर जाने के लिए जो गेट है, उसी के बराबर में अन्दर यह बना हुआ है।

शराब के सम्बन्ध में बैठने वाले अधिकारी की बिल्डिंग 1910ई0 में बनी थी जो भूमि रजिस्ट्री ऑफिस के बिल्कुल बराबर में है। 1910 की बनी हुई बिल्डिंग आज भी यहां मौजूद है। उसका एक हिस्सा घोड़ा चौराहा से आगे बढ़ते हुए भी है।

<u>मुख्तार खाना</u>

अशोक लाट से आगे मुख्तार खाना मुसलमानों के समय से है अन्ग्रेजों के समय में भी बना रहा है। अभी भी ठीक है और इस में वकीलों के बस्ते लगे है।

वर्तमान में तहसील व कचहरी में एक एक कुआ है। उनके नाम का पता नहीं। कलेक्ट्रेट व कमिश्नरी में नए भवन बने है।

अमर उजाला 29 दिसंबर 2025 सोमवार